www.thearyasamaj.org

ओ३म्

सुधारक

गुरुकुल झज्जर का लोकप्रिय मासिक पत्र

वर्ष 64 अंक 8 अप्रैल 2017 चैत्र 2074 वार्षिक मूल्य 150 रु०

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी

चैत्र शुक्ला नवमी को इनका जन्मदिवस मनाया जाता है

आर्यसमाज स्थापना शताब्दी पर तथा स्थापना के 125 वें वर्ष में
भारत सरकार द्वारा प्रचालित डाक टिकट

संस्थापक : स्व० स्वामी ओ३मानन्द सरस्वती
प्रधान सम्पादक : आचार्य विजयपाल
सम्पादक : विरजानन्द दैवकरणि
व्यवस्थापक : ब्र० अरुण आर्य

www.thearyasamaj.org

सुधारक के नियम व सविनय निवेदन

1. सुधारक का वार्षिक शुल्क 150 रुपये है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 1500 रुपये है।
2. यदि सुधारक 20 तारीख तक नहीं पहुंचता है तो आप व्यवस्थापक सुधारक के नाम से पत्र डालें। पत्र मिलते ही सुधारक पुन: भेज दिया जाएगा।
3. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा '**व्यवस्थापक सुधारक**' के नाम भेजें। सुधारक वी.पी. रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेजा जाएगा।
4. लेख सम्पादक सुधारक के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त, सारगर्भित तथा मौलिक होने चाहिएं तथा स्पष्ट, शुद्ध एवं सुन्दर लेख में कागज के एक ओर लिखे जाने चाहिएं। अशुद्ध एवं गन्दे लेखवाला लेख नहीं छापा जाएगा। लेखों को प्रकाशित करना न करना तथा उनमें संशोधन सम्पादक के अधीन होगा। अस्वीकृत लेख डाक-व्यय प्राप्त होने पर ही वापिस भेजे जाएंगे।
5. सुधारक में विज्ञापन भी दिए जाते हैं, परन्तु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही दिया जाएगा।
6. यह सुधारक मासिक पत्र समाजसुधार की दृष्टि से निकाला जाता है। इसमें आपको धर्म, यज्ञकर्म, समाजसुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, योगासन आदि विषयों पर लेख पढ़ने को मिलेंगे।
7. सुधारक के दस ग्राहक बनानेवाले सज्जन को एक वर्ष तक नि:शुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा पचास ग्राहक बनानेवाले सज्जन को दो वर्ष नि:शुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा उसका फोटो सहित जीवन परिचय सुधारक में निकाला जाएगा।

–व्यवस्थापक

वर्ष :६४ अंक : ८
अप्रैल २०१७ विक्रमाब्द २०७४
दयानन्दाब्द १९४ कलिसंवत् ५११८
सृष्टिसंवत्-१,९६,०८,५३,११८

विषय-सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
१.	आर्याभिविनयः	१
२.	सम्पादकीय	२
३.	श्रीराम और रामायण की ऐतिहासिकता	४
४.	वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है.....	१०
५.	हिन्दी मोहन मेरा	१४
६.	स्वामी ओमानन्द जी की डायरी से	१६
७.	गाँव भालौट में वैदिक विधि से होली.....	१८
८.	गुरु संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल......	१९
९.	आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद...	२०
१०.	अमृतसर का जलियांवाला बाग काण्ड	२१
११.	होली के उपलक्ष्य में सारंगपुर में यज्ञ...	२२
१२.	हर्ष सूचना	२२
१३.	ग्राम गोच्छी (झज्जर) में शान्ति यज्ञ...	२३
१४.	आर्यसमाज की स्थापना विषयक महर्षि..	२३
१५.	गुरुकुल यमुनानगर में नया प्रवेश प्रारम्भ	२४

सुधारक मासिक पत्र का वार्षिक शुल्क १५० रुपये भेजकर स्वयं ग्राहक बनें और दूसरे साथियों को भी ग्राहक बनाकर सुधार कार्य में सहयोग दीजिये।

-व्यवस्थापक सुधारक

आर्याभिविनयः

प्रार्थना-विषय

यतोयतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु।
शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ।।7।।

26।22।।

व्याख्यान- हे परमेश्वर दयालो! [(**यतोयतः**)] जिस-जिस देश से आप (**समीहसे**) सम्यक् चेष्टा करते हो[1], [(**ततो नो अभयं कुरु**)] उस-उस देश से हमको अभय करो। अर्थात् जहां-जहां से हमको भय प्राप्त होने लगे, वहां-वहां से सर्वथा हम लोगों को अभय=भयरहित करो। [(**शं नः कुरु०**)] तथा प्रजा से हमको सुख करो। हमारी प्रजा सब दिन सुखी रहे। भय देनेवाले कभी न हो। तथा पशुओं से भी हमको अभय करो। किञ्च किसी से किसी प्रकार का भय हम लोगों को आपकी कृपा से कभी न हो। जिससे हम लोग निर्भय होके सदैव परमानन्द को भोगें, और निरन्तर आपका राज्य[2] तथा आपकी भक्ति करें।।7।।

स्तुति-विषय

वेदाहमेतं पुरुषं महान्त-
मादित्यवर्णं तमसः परस्तात्।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति
नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।।7।।

31।18।।

व्याख्यान- [(वेदाहमतं पुरुषम्)] सहस्रशीर्षादि विशेषणोक्त पुरुष सर्वत्र परिपूर्ण "पूर्णत्वात् पुरि शयनाद्वा पुरुष इति निरुक्तोक्तेः"[1], उस पुरुष को मैं जानता हूं। अर्थात् सब मनुष्यों को उचित है कि उस परमात्मा को अवश्य जानें, उसको कभी न भूलें। अन्य किसी को ईश्वर न जानें। वह कैसा है? कि-(महान्तम्) बड़ों से भी बड़ा, उससे बड़ा वा तुल्य कोई नहीं है। (आदित्यवर्णम्) आदित्यादि का रचक और प्रकाशक वही एक परमात्मा है, तथा वह सदा स्वप्रकाशस्वरूप ही है। किंच (तमसः परस्तात्) तम जो अन्धकार=अविद्यादि दोष उस से रहित ही है। तथा स्वभक्त धर्मात्मा सत्यप्रेमी जनों को भी अविद्यादि-दोषरहित सद्यः करनेवाला वही परमात्मा है। विद्वानों का ऐसा निश्चय है कि परब्रह्म के ज्ञान और उसकी कृपा के बिना कोई जीव कभी सुखी नहीं होता। (तमेव विदित्वातिमृत्युमेति) उस परमात्मा को जानके ही जीव मृत्यु को उल्लंघन कर सकता है, अन्यथा नहीं। क्योंकि (नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय) बिना परमेश्वर की भक्ति और उसके ज्ञान के मुक्ति का मार्ग कोई नहीं है, ऐसी परमात्मा की दृढ़ आज्ञा है। सब मनुष्यों को इसमें ही वर्त्तना चाहिये, और सब पाखण्ड और जंजाल अवश्य छोड़ देना चाहिये।।8।।

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय

ओ३म्

आर्यसमाज का नेतृत्व किस राह पर?

महर्षि दयानन्दजी सरस्वती ने 10 अप्रैल 1875 ई. को मुम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की। इसका उद्देश्य था संसार से अविद्या, पाखण्ड, गुरुडम, ईर्ष्या, द्वेष, अस्पृश्यता, अशुद्ध खान-पान, गोहत्या, मूर्तिपूजा, अनार्षग्रन्थों का पठन-पाठन, देश की पराधीनता, बालविवाह, वैधव्यकष्ट, भ्रूणहत्या, कन्याओं की अशिक्षा आदि दोष दूर होकर भारतवर्ष पुन: अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त हो सके।

आर्यसमाज की स्थापना के पश्चात् कुछ वर्षों तक आर्य विद्वान् संन्यासी, उपदेशक, शास्त्रार्थमहारथी आदि सज्जनों ने आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया था। परन्तु उसी समय कुछ ऐसे लोग भी थे जो प्रच्छन्न आर्यरूप से स्वयं को आर्य कहते थे। उन्होंने ऋषिमन्तव्यों को हृदय से कभी स्वीकार नहीं किया और मांसभक्षण को वेदानुकूल सिद्ध करने की व्यर्थचेष्टा की तथा गुरुकुल पद्धति की अपेक्षा आर्यसमाज की आड में स्कूल-कालेज की शिक्षा को प्रचलित करने का पूरा प्रयास किया। इसी का दुष्परिणाम यह हुआ कि घासपार्टी और मांसपार्टी के नाम से आर्यसमाज में दो दल बन गये। घासपार्टी और मांसपार्टी दलों की सत्ता तो अब प्राय: समाप्त है, परन्तु गुरुकुल पद्धति और डी.ए.वी. पद्धति अभी तक है और यह डी.ए.वी. पद्धति गुरुकुल पद्धति पर प्रभुत्व स्थापित करने में पूर्णत: सफल है, इसी कारण आर्षपाठविधि के अनेक गुरुकुल अपनी परम्परा को छोड़कर स्कूली शिक्षा को अपनाने लग गये हैं।

आर्यसमाज का यह प्रमुख कर्त्तव्य था कि महर्षि दयानन्दजी द्वारा निर्णीत आर्षपाठ विधि की रक्षा करना। परन्तु आज देश-विदेश के आर्यसमाज, आर्य प्रतिनिधि सभायें तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा में भी एकरूपता न होकर अनेकता का रोग घर किये हुए है। एकता का प्रयास तो हो रहा है, प्रतीक्षा है इसकी सफलता की।

यह आश्चर्य है कि ये लोग वेद, वैदिक धर्म और महर्षि दयानन्द को अपना आदर्श मानते हुए भी अनेक भागों में बटे हुए हैं। इसका मूल कारण है कि आज आर्यसमाज का नेतृत्व किसी योग्यतम व्यक्ति के हाथ में नहीं है जिसे सभी एकमत से स्वीकार कर सकें। दूसरा कारण यह है कि आर्यसमाज के अधिकारी जिस पद पर जम गये, उससे हटना नहीं चाहते। ऐसे व्यक्ति धन और छलबल के आधार पर अपनी पदलिप्सा को बनाये रखते हैं। जो व्यक्ति समर्पणभाव से आर्यसमाज की सेवा में लगे हुए हैं, उन्हें उच्चपद पर आसीन होने देना ऐसे व्यक्तियों को असह्य हो जाता है, इसीलिए आर्यसमाज का नेतृत्व खंडित होता जा रहा है। एक ही प्रदेश और देश में अनेक

प्रान्तीय सभायें, अनेक सार्वदेशिक सभायें देखकर मन को पीड़ा होती है। वेद के संगठन सूक्त का पाठ प्रत्येक आर्यसमाज में यज्ञ के पश्चात् करने की प्रथा चालू है, परन्तु यज्ञ समाप्ति के पश्चात् वही पार्टीबन्दी, उठापटक और नेतृत्व को हाथ में रखने की योजना को क्रियान्वित करने का कार्य प्रारम्भ हो जाता है।

ऐसी विषम परिस्थिति में आर्यसमाज का नेतृत्व देश में फैले अविद्या अन्धकार को दूर करने में कितना सक्षम हो सकता है, यह विचारणीय प्रश्न है। जो समाज स्वयं ही स्वार्थपूर्ति के कर्त्तव्यों में लगा हुआ हो, वह अन्यों को परमार्थ में लगने का उपदेश यदि करेगा तो उसकी बात कौन मानेगा?

चैत्र शुक्ला पंचमी को मनाये जाने वाले आर्यसमाज के स्थापना दिवस को हम एक परम्परा का वहन करना मात्र मानकर मना लेते हैं। उत्सव करके तथा भाषणबाजी करके चलते बनते हैं। इस दिन हमे संकल्प लेना चाहिये कि जिस ऋषिवर ने देशोत्थान हेतु अनेक कष्ट सहे, उन्होंने यही सोचा था कि मेरे बाद मेरा अधिकृत यह आर्यसमाज ही मेरी भावनाओं के अनुसार कार्य करेगा। परन्तु आज प्रत्यक्ष है कि उनकी हार्दिक भावनाओं की कितनी पूर्ति हो रही है। बड़े-बड़े सम्मेलनों के द्वारा भीड़ एकत्र करके दो-तीन दिन शोर करके अपने कर्त्तव्य की इतिश्री मान लेते हैं। इतने बड़े सम्मेलन से जनता को क्या मिला, कितने नये आर्य बने, कितना साहित्य प्रचार हुआ, कितने नवयुवक ऐसे प्राप्त हुए जो जीवनभर वेद और आर्यसमाज का प्रचार करेंगे। सम्मेलन के बाद इन प्रश्नों को क्रियान्वित करने के लिए प्रयत्न करना चाहिये।

इस आर्यसमाज के स्थापना दिवस पर सभी प्रान्तीय सभाओं और सार्वदेशिक सभाओं के प्रधानों से नम्र निवदेन है कि यदि वे सच्चे हृदय से ऋषि दयानंद के आदेश को मानते हों तो अपनी लोकैषणा को त्याग कर एक सूत्र में बद्ध हो जाने की कृपा करें, अन्यथा यह परम्परा पीढी-दर पीढी चलती रहेगी।

यदि यह परम्परा यूं ही चलती रही तो अन्य मतावलम्बी हमारा अस्तित्व समाप्त करने में देर नहीं लगायेंगे। अब भी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, पौराणिक लोग, ईसाई और मुसलमान आर्यसमाज को सहन नहीं कर पा रहे। यदि हम नहीं सम्भले तो आर्यसमाज की सारी संस्थायें और सम्पत्ति पराये हाथों में जाने से कोई नहीं रोक पायेगा।

अतः आर्यसमाज का भला इसी में है कि वे परस्पर प्रेमभाव से रहते हुए किसी एक महापुरुष के आदेश का पालन करते हुए संगठित होने का हृदय से प्रयत्न करें, यह तभी सम्भव है जब हम ईर्ष्या-द्वेष पदलिप्सा और वैमनस्य छोड़कर वेद और ऋषि दयानन्द को अपना आदर्श हृदय से स्वीकार करके तदनुसार आचरण भी करेंगे।

-विरजानन्द दैवकरणि

श्रीराम और रामायण की ऐतिहासिकता

(विरजानन्द दैवकरणि, गुरुकुलझज्जर)

अंग्रेजों द्वारा आर्यावर्त 'भारतवर्ष' पर राज्य स्थापित करने से पूर्व भारत पर कुषाण, यूनानी, क्षत्रप, हूण और मुसलमानों ने आक्रमाण भी किये और राज्य भी स्थापित किये। उन्होंने भारत की प्राचीन संस्कृति, सभ्यता और लिखित ऐतिहासिकता को नकारने की भरसक कुचेष्टा की परन्तु वह फिर भी किसी न किसी रूप में बनी रही। आर्यसंस्कृतिघातक इन शासकों के समय में भी भारतीय जनता में अपने पूर्वजों तथा अपनी संस्कृति के प्रति पूर्ण आस्था बनी रही।

भारत के गरिमामय इतिहास तथा वैदिक संस्कृति की सत्यता को भारत के जनमानस से दूर करने के लिए अंग्रेजों ने कूटनीति का आश्रय लेकर भारतीय संस्कृति, सभ्यता और गरिमापूर्ण ऐतिहासिक तथ्यों को स्वरचित पाठ्य पुस्तकों में जंगली, अनपढ़ लोगों द्वारा कल्पित बताना आरम्भ किया। इसी कुभावना से युक्त गोरों ने असत्य इतिहास के ग्रन्थ पाठ्यक्रम में लगाकर कोमलमति छात्रों में भारतीय संस्कृति, सभ्यता और इतिहास के प्रति घृणा का भाव भरने का सफल प्रयास किया। दुःख है कि इसी प्रकार की हीन बातें अब भी भारत में पढाई जा रही हैं।

इसी प्रयास का कुपरिणाम है कि महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू जैसे व्यक्ति भी राम और रामायण की ऐतिहासिकता का निषेध करने में लज्जा अनुभव नहीं करते। गाँधी जी पहले रामराज्य की बात करते होंगे परन्तु नेहरू जी स्पष्ट कहते थे कि "मुझे गांधी जी के 'रामराज्य' बनाने वाले शब्द बहुत बुरे लगते थे।" इसीलिए वे श्रीराम के ऐतिहासिक अस्तित्व को डिस्कवरी ऑफ इण्डिया में भी नकारते हैं। देखें जवाहर लाल नेहरू जीवन पृष्ठ 72. बाद में गांधी जी ने भी यह कहना प्रारम्भ किया "श्रीराम व श्री कृष्ण ऐतिहासिक पुरुष नहीं थे वे भूमण्डल पर कभी नहीं हुए" हरिजन पत्रिका 20.5/20.7.1950.

प्रजापिता लेखराज ब्रह्माकुमारियों के जन्मदाता के साप्ताहिक सत्संगों में भी श्रीराम के अस्तित्व को नकारकर रामायण को उपन्यास (नावल) बताया गया है (घोरकलहयुग विनाश पृष्ठ 15 व मुरली सं० 65.) इसी भांति पाश्चात्य शिक्षापद्धति से पठित समुदाय भी रामायण और महाभारत को काल्पनिक मानता है। एक असत्य का प्रचार लम्बे समय तक योजनाबद्ध तरीके से जब किया जाता है तो भावी पीढियां उसे ही सत्य मानने लग जाती हैं। दुर्भाग्य से प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति के प्रति अंग्रेजों ने यही खेल खेला और वे अपने कार्य में पर्याप्त सफल भी हुए, उनका प्रभाव अभी तक विद्यमान है।

एक विचित्र बात देखिये प्राचीन आर्य भारतीयों द्वारा लिखा गया इतिहास तो

'काल्पनिक कथा' कहा जाए परन्तु अंग्रेजों द्वारा लिखा गया भारतविरोधी साहित्य सच्चा माना जाये! यह कितनी चालाकी और धूर्ततापूर्ण विडम्बना है। विदेशी गोरों एवं कम्युनिस्टों द्वारा लिखे गए ग्रन्थ काल्पनिक और झूठे क्यों नहीं माने जायें, इनकी बातों का क्या प्रमाण है? भारतीय इतिहास की सत्यता हेतु ये लोग पुरातात्त्विक प्रमाण मांगते हैं तो इनकी बातों के पुरातात्त्विक प्रमाण कहां हैं कि रामायण और महाभारत नहीं हुए? क्या भूमि में दबे ऐसे प्रमाण मिले हैं जिन पर यह लिखा हो कि आर्य भारत से आये, राम और कृष्ण नहीं हुए इत्यादि?

यदि इन झूठे लोगों द्वारा लिखा व झूठा साहित्य प्रमाण हो सकता है तो प्राचीन सत्यनिष्ठ आर्यऋषियों द्वारा लिखा गया सत्य साहित्य प्रमाण क्यों नहीं माना जाये? उसमें क्या आपत्ति है?

अत्यन्त खेद का विषय है कि भारत के पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग ने शपथपत्र देकर यह कहना चाहा है कि राम और रामायण का ऐतिहासिक कोई प्रमाण नहीं है।

इसके लिए हमारा कथन है कि ऐतिहासिक प्रमाण अनेक प्रकार के होते हैं, लिखित इतिहास, परम्परा, जनश्रुति, वंश परम्परा तथा पुरातत्त्वीय प्रमाण। लिखित इतिहास शब्द प्रमाण के अन्तर्गत आते हैं, जनश्रुतियों से अनुमान प्रमाण सिद्ध होता है तथा पुरातत्त्वीय प्रमाण से इन्हें पुष्टि मिलती है। यह आवश्यक नहीं है कि सभी प्रमाण भूमि में दबे हुए ही हों। प्राकृतिक वस्तु की एक सीमा होती है, वह समय पाकर नष्ट होती रहती है, उसे कुछ ही समय तक रखा जा सकता है। प्रकृति से बनी वस्तु की नश्वरता अवश्यम्भावी है, इसीलिए उसकी प्रामाणिकता को दीर्घकाल तक सुरक्षित करने के लिए लिखित रूप का सहारा लिया जाता है। महर्षिदयानन्द सरस्वती जो 19 वीं शती के महान् वैज्ञानिक व योगी थे उन्होंने भी अपने प्रसिद्ध ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश में श्रीराम की चर्चा की है।

भारत के प्राचीन ऐतिहासिक खण्डहरों को यदि निष्ठापूर्वक पूर्णरूप से खोदा जाये तो उनमें रामायण, महाभारत आदि की ऐतिहासिकता के पुरातात्त्विक प्रमाण भी मिलते हैं। इस विषय में स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती (आचार्य भगवान्देव) गुरुकुल झज्जर ने पर्याप्त अन्वेषण किया और रामायण, महाभारत से सम्बद्ध अनेक मृन्मूर्तियां (टैराकोटा) प्राप्त कीं। सिरसा, हाठ, नचारखेड़ा (हिसार), जींद, सन्धाय (यमुनानगर), कौशाम्बी (इलाहाबाद), अहिच्छत्रा (बरेली), रूपधनी, कटिंघरा (एटा) और भादरा (श्रीगंगानगर) से ऐसे अनेक पुरातत्त्वीय प्रमाण प्राप्त हुए हैं जिनसे सिद्ध होता है कि श्रीराम, सीता, सुग्रीव, हनुमान्, जाम्बवन्त, बाली और रामायण की ऐतिहासिकता सिद्ध है। इनका प्रमाण गुरुकुल झज्जर के पुरातत्त्व संग्रहालय में देखा जा सकता

www.thearyasamaj.org

है। इन मृन्मूर्तियों पर गुप्तकाल से पूर्व की लिपि में वाल्मीकीय रामायण के श्लोक भी लिखे हुए हैं। ये श्लोक आज भी रामायण में मिलते हैं।

उपर्युक्त स्थानों से प्राप्त मृन्मूर्तियों में निम्नलिखित दृश्य अंकित हैं--

1. राम, सीता, लक्ष्मण का पंचवटी गमन, 2. मारीचमृग, 3. त्रिशिरा राक्षस द्वारा खर-दूषण से विचारविमर्श और राम द्वारा चौदह राक्षसों के वध का वर्णन, 4. रावण द्वारा सीता हरण, 5. सुग्रीव आदि द्वारा सीता को आभूषण फैंकती को देखना, 6. सुग्रीव द्वारा श्रीराम का स्वागत, 7. सुग्रीव बाली-युद्ध, 8. श्रीराम द्वारा बाली का वध, 9. हनुमान् द्वारा अशोक-वाटिका (प्रमदावन) को नष्ट किया जाना, 10. त्रिशिरा-राक्षस का वध, 11. रावणपुत्र इन्द्रजित् का युद्ध में जाना आदि।

जो व्यक्ति राम के अस्तित्व का निषेध करते हैं, उन्हें विचारना चाहिये कि श्रीराम, सीता, हनुमान् आदि से सम्बन्धित सैंकड़ों ग्रन्थ हैं जैसे- संस्कृत साहित्य, बौद्ध साहित्य, जैन साहित्य, हिन्दी साहित्य, गुजराती, तमिल, मलयालम, कन्नड़, तेलुगु, असमिया, बंगला, उर्दू, अरबी, फारसी आदि के ग्रन्थों में रामकथा और रामायण की रचनायें हुई हैं।

श्रीरामभक्तों को यह बात विशेष रूप से ध्यान में रखनी चाहिए कि हनुमान् आदि सब वा-नर लोग बन्दर नहीं अपितु वा-विशेष, नर-पुरुष थे। हनुमान् जी के माता पिता भी मनुष्य थे। रामायण केवल अयोध्या लौटने पर राज्याभिषेक तक ही है, शेष उत्तर काण्ड प्रक्षिप्त है। सीता को घर से निकालने वाली कहानी भी झूठ है। एक शंबूक भक्त का राम द्वारा वध किया जाना भी उत्तरकाण्ड में प्रक्षिप्त है। ऐसी वेदविरुद्ध मान्यताओं को मर्यादा पुरुष श्रीराम के जीवन में प्रक्षेप करने से ही लोगों को रामायण की ऐतिहासिकता पर संशय होता है।

यूनान के कवि 'होमर' का प्राचीन इलियड काव्य और रामायण एक ही हैं। बाली, जावा, सुमात्रा, इण्डोनेशिया के पुराने मन्दिरों में रामायण कथा के दृश्य अंकित हैं। अकबर ने अपनी एक स्वर्णमुद्रा पर राम-सीता को चित्रित किया था। धार और रतलाम राज्य की मुद्राओं पर हनुमान् अंकित है। कुषाण सम्राट् कनिष्क ने अपनी मुद्रा पर जोडो=वायु देवता हनुमान् को स्थान दिया था। सन्तों द्वारा प्रचालित पीतल की मुद्रा पर राम आदि चारों भाई, सीता और हनुमान् चित्रित हैं।

श्रीरामचन्द्र का काल--

भारतीय प्राचीन परम्परा के अनुसार श्रीराम त्रेता और द्वापर की सन्धिकाल में हुए हैं--

त्रेतायुगे चतुर्विंशे रावणः तपसः क्षयात्।
रामं दाशरथिं प्राप्य सगणः क्षयमेयिवान्।। वायुपुराण 70/48

महाभारत में भी श्री रामचन्द्र के होने का श्लोक लिखा है--

सन्धौ तु समनुप्राप्ते त्रेतायां द्वापरस्य च।
रामो दाशरथि.......--शान्तिपर्व 343.16

यदि राम को त्रेता युग की समाप्ति पर

www.thearyasamaj.org

भी मानें तो इस कलियुग से पूर्व 864000 वर्ष का द्वापर युग बीत गया और इस कलियुग के 5117 वर्ष बीत चुके हैं। इस प्रकार श्रीराम आज से 869117 वर्ष पूर्व विद्यमान थे। यदि चौबीसवें त्रेतायुग की समाप्ति पर राम की स्थिति मानें तो अब अट्ठाईसवें कलियुग तक 18149117 वर्ष राम को व्यतीत हो गये।

4320000 वर्षों की एक चतुर्युगी होती है।, 432000 वर्ष का कलियुग।, 864000 वर्ष का द्वापरयुग।, 1296000 वर्ष का त्रेतायुग।, 1728000 वर्ष का सतयुग।, योग 4320000 वर्ष= 1 चतुर्युगी।

इस वर्तमान वैवस्वत मनु की चौबीसवीं चतुर्युगी के अन्त में श्रीराम हुए। चौबीसवीं चतुर्युगी का द्वापरयुग, कलियुग, 25वीं, 26वीं, 27वीं चतुर्युगी पूरी, वर्तमान अट्ठाईसवीं चतुर्युगी के सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और इस कलियुग के आज तक बीते 5117 वर्ष) इन सब को जोड़ 18149117 (एक करोड़ इक्यासी लाख, उनञ्चास हजार एक सौ सतरह वर्ष) होता है। दूसरे पक्ष में इतने वर्ष पूर्व श्रीराम की विद्यमानता थी।

यह बात सर्वदा ध्यान में रहे कि इतने सुदीर्घ काल में प्रकृति से बने भवन तथा मुद्रा आदि का अस्तित्व प्रायः नहीं रह सकता। इसलिए यह दुराग्रह करना कि श्रीराम और अयोध्या से सम्बन्धित कोई वस्तु नहीं मिली, इसलिए राम नहीं हुए यह कहना हास्यास्पद है। जब कि आज भी भारत-लंका के बीच श्रीराम द्वारा बनवाया गया रामसेतु नामक पुल विद्यमान है।

आज से 500 वर्ष बाद जनता यह कहे कि महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू नहीं हुए ये सब काल्पनिक हैं, तो आपके पास पुरातत्त्व का क्या उत्तर होगा? इसलिए किसी वस्तु की सिद्धि हेतु पुरातत्त्व के साथ लिखित साहित्य का भी महत्त्व कम नहीं अपितु अधिक ही होता है।

अतः हमें विदेशी शिक्षा से प्रभावित होकर अपने पूर्वजों के अस्तित्व को नकार कर कृतघ्नता का पात्र नहीं बनना चाहिये। लज्जा का विषय है कि विदेशी जंगली लोगों को प्राचीन भारत का गौरव सहन नहीं हुआ, इसीलिए वे इसे काल्पनिक कहें तो क्या आश्चर्य है। क्योंकि उन्होंने भारत में ईसाई मत चलाना था, अतः उन्होंने आर्य हिन्दुओं के आकर्षण के मुख्य केन्द्र श्रीराम, श्रीकृष्ण एवं वेदों को बिगाड़ने की कुचेष्टा की।

भारत में एक वर्ग ऐसा भी है जो रावण के अस्तित्व को स्वीकार करके उसकी पूजा करता है। यही वर्ग राम और राम द्वारा श्री नल-नील इंजीनियर द्वारा निर्मित सेतु का निषेध करता है। उनसे पूछना चाहिये कि जब रावण हुआ है और राम नहीं, तो रावण ने तथा उसके भाई, पुत्र और राक्षसों ने युद्ध किससे किया और उनकी मृत्यु किसके द्वारा हुई?

भारतीय इतिहास में राम द्वारा निर्मित सेतु का उल्लेख मिलता है। अब इसे उपग्रह

द्वारा भी सिद्ध कर दिया गया है तो भी इस ऐतिहासिक तथ्य को न मानकर उसे तोड़ने का प्रयत्न करना इतिहास को नष्ट करने जैसा कुकृत्य है। जिस पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग का यह उत्तरदायित्व है कि वह भारतीय संविधान के अनुछेद 49 के अनुसार प्राचीन स्मारकों और ऐतिहासिक स्थलों की सुरक्षा करे, वही राम, रामसेतु और रामायण की ऐतिहासिकता का निषेध कर राष्ट्रदोह का कार्य कर रहे हैं, ऐसे अधिकारियों से युक्त सरकार व नेता इस सेतु की सुरक्षा के लिए यत्न करेंगे ऐसा सोचना स्वयं को भुलावे में रखना है। ऐसे अनधिकारी व्यक्ति को पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग का निदेशक बनाना भारत के लिए अपमान की बात है।

इसलिए भारतीय जनता को ऐसे लोगों के वक्तव्यों से सावधान रहना चाहिये जो भारतीय इतिहास और संस्कृति को नकार कर हमें हीन भावना से ग्रस्त देखना चाहते हैं।

1. मुद्रांकित पञ्जिका में लिखा है--(त्रेतायुगे) तत्रराजान:सूर्यवंशीयबाहुक-सगर-अंशुमत्-अमञ्जस-दिलीप-भगीरथ-अज-दशरथ-रामचन्द्र-कुशी-लवा एते चक्रवर्तिन:। ये 11 राजा चक्रवर्ती हुए हैं--शब्दकल्पद्रुम काण्ड प्रकाशक कालिकाता राजधानी, शकसंवत् 1809

2. साधुसम्प्रदाय द्वारा चलाई गई धार्मिक मुद्रा पर लेख-रामलछमनजानकजवल हनमनक (संवत्) 51740, आज से प्राय:दो सौ वर्ष पूर्व का यह श्रीराम का संवत् है। मुद्रा के मुखभाग पर राम-सीता राजछत्र के नीचे सिंहासनासीन तथा पृष्ठभाग पर राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, सीता और हनुमान् के चित्र हैं।

3. जब रघुगण राजा थे, तब रावण भी यहां के अधीन था। जब रामचन्द्र के समय में विरुद्ध हो गया, तो उसको रामचन्द्र ने दण्ड देकर राज्य से नष्ट कर उसके भाई विभीषण को राज्य दिया।

4. विमान में बैठकर आकाश मार्ग से अयोध्या जाते हुए राम ने कहा--''हे सीते! ... और यह देख! यह सेतु हमने बांधकर लंका में आके उस रावण को मार तुझ को ले आये।'' श्रीराम प्रेमियों को यह बात भी सदा ध्यान में रखनी चाहिए की श्रीराम जी को बनवास चैत्र मास में हुआ था। उन्होंने चौदह वर्ष की पूर्णता पर रावण का वध करके विमान द्वारा अयोध्या प्रस्थान किया था। इससे सिद्ध होता है कि रावण का वध चैत्र मास में हुआ था न कि आश्विन में।

5....... रघु पीछे राजा राम हुए। इनका रावण से युद्ध हुआ। इनका इतिहास रामायण में वर्णन किया है--उपदेशमंजरी (पूनाप्रवचन) दसवां उपदेश पूना में (1875 में स्वामी दयानन्द द्वारा दिया उपदेश)।

6. भूगर्भीय आन्तरिक उथल-पुथल, जलस्तर के ऊपर आ जाने और लाखों वर्ष पुराने अवशेषों का प्राकृतिक रूप से शनै:शनै: क्षरण होने से पुरातात्त्विक प्रमाण नहीं मिल पाते। उनके अभाव में साहित्य ही एकमात्र

प्रमाण रह जाता है। आप्त ऋषियों द्वारा कथित शब्द प्रमाण और ऐतिह्य प्रमाण इसीलिये मान्य होता है कि वे कपोलकल्पित बातें नहीं कहते किन्तु ऐतिहासिक सत्यता का ही लेखन करते हैं।

7. रामायण-महाभारत से अतिरिक्त महाकवि कालिदास, भास, भट्टि, प्रवरसेन, क्षेमेन्द्र, भवभूति, राजशेखर, कुमारदास, विश्वनाथ, सोमदेव, विमलसूरि, हेमचन्द्र, हरिषेण, गुणाढ्य, नारद, लोमश, माधवदेव, तुलसीदास, सूरदास, चन्दरवरदाई, मैथिलीशरण गुप्त, केशवदास, गुरु गोबिन्दसिंह, समर्थ गुरु रामदास आदि चार सौ से अधिक कवियों ने संस्कृत, पाली, हिन्दी आदि अनेक भाषाओं में राम और रामायण के पात्रों से सम्बद्ध काव्यों की रचना की है।

8. विदेशों में रामायण-- तिब्बतीरामायण, पूर्वी तुर्किस्तान की खोतानी रामायण, इण्डोनेशिया की ककबिन रामायण, बाली द्वीप का रामायण सम्बन्धी वायांग वोंग नाटक, जावा का सेरतराम, सेरी राम, रामकेलिंग, हिकायत सेरी राम, पातानी रामकथा, इण्डोचाइना की रामकीर्ति, ख्मेरे रामायण, प्राचीन रोम के वीनस की कृति डायोनीशिया और वाल्मीकीय रामायण के कथानक में अद्‌भुत समानता है।

9. कम्बोडिया के अंकोरकाट मन्दिर की भित्तिकाओं पर रामायण और महाभारत के दृश्य अंकित हैं। भारत में होने वाली रामलीला की भांति इण्डोनेशिया के मुस्लिम कलाकार अत्यन्त भावपूर्ण ढंग से रामलीला का मंचन करते हैं।

10. मध्य जावा के नवमशती में निर्मित परमबनन (परमब्रह्म) नामक विशाल शिवमन्दिर की भित्तिकाओं पर चारों ओर प्रस्तरशिलाओं पर रामायण की चित्रावली अंकित है।

इतने विस्तृत प्रमाणों की विद्यमानता में भी जो लोग यह कह रहे हैं कि राम का कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है, वे राष्ट्र एवं संस्कृति के द्रोही हैं। पाठक सर्वदा यह बात ध्यान में रखें कि श्रीरामजी एक देवतुल्य आदर्श, वैदिक पुरुष हैं। वे केवल आस्था का ही विषय नहीं हैं अपितु एक विश्वपूज्य ऐतिहासिक पुरुष हैं। किसी व्यक्ति अथवा वस्तु की सत्ता मात्र आस्था से नहीं होती अपितु उसके ऐतिहासिक गौरव पर आश्रित होती है। यदि मैं कहूं की ईसा, कालमार्क्स, नेहरू व गांधी नहीं हुए तो क्या मेरी ऐसी नकारात्मक आस्था से वे इतिहास के पृष्ठों से समाप्त हो जाएंगे। 18/10/2007 को जी न्यूज ने रात्री 9 बजे अपने एक प्रवक्ता को लंका की अशोक वाटिका में दिखाते हुए यह सिद्ध किया था कि सीताजी इसी स्थान पर रहकर श्रीराम जी की प्रतीक्षा करती थी व समीप बह रही नदी के किनारे बैठ कर ओम् का ध्यान करती थी।

विस्तृत विवरण लेखक द्वारा रचित 'प्राचीन भारत में रामायण के मन्दिर' नामक पुस्तक में पढ़ सकते हैं।

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, पर कैसे?

आर्यसमाज का तीसरा नियम है-''वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।'' इस नियम को समझने के लिए ऋग्वेद का 'अदिति'-शब्द बहुत सहायक सिद्ध हो सकता है। अदिति के लिए ऋग्वेद (1.89.10) में निम्न मन्त्र है-

अदिति द्यौः अदिति अंतरिक्षं
अदितिः माता सः पिता सः पुत्रः।
विश्वेदेवाः अदितिः पञ्चजनाः
अदितिः जातं अदितिः जनित्वम्।।

संसार में जो कुछ है, वह 'अदिति' है। जो दिति न हो वह अदिति होगा। ''दिति'' शब्द 'दो, अवखण्डने' धातु से बना है। 'दिति' का अर्थ है-'खण्डित' ''अदिति'' का अर्थ हुआ-'अखण्डित'। खण्डित का अर्थ है-एक से दो, दो से तीन, तीन से चार-इस प्रकार बँटते जाना। अखण्डित का अर्थ है-सर्वदा एक बने रहना, टुकड़ों में न बँटना। जितना भौतिक ज्ञान है, जिसे हम विज्ञान कहते हैं, वह सब दिति के भीतर समा जाता है। अगर सब कुछ अदिति है, जो जात या जनित्व है, वह सब ''अदिति है, तो वेद भी अदिति है, सत्य भी अदिति है, वेद-ज्ञान भी 'अदिति' है। वेद-ज्ञान को अदिति कहने का अर्थ हुआ अखण्डित-ज्ञान, ऐसा ज्ञान जो सदा-सर्वदा एक बना रहता है, कभी बदलता नहीं-सदा सत्य-सनातन। इसी 'अदिति'-शब्द के लिए ऋग्वेद (8.18.6) में दो अन्य शब्दों का प्रयोग हुआ है, जिससे हमारा विषय अधिक स्पष्ट हो जाता है। वह मन्त्र है-

अदितिर्नो दिवा पशुं अदितिर्नक्तं अद्वया।
अदितिः पात्वहंसः सदावृधा।

इस मन्त्र में 'अदिति' के लिए 'अद्वय' तथा 'सदावृध' शब्दों का प्रयोग हुआ है। 'अद्वय' का अर्थ है-जो दो न हो। 'सदावृध' का पदच्छेद करके इसके दो अर्थ हो जाते हैं। सदावृध जो सदा बढ़ाता रहे, विकसित होता रहे, एक से दो, दो से तीन, तीन से चार होता रहे, बँटता रहे। इसका दूसरा अर्थ है-सदा अवृध जो सदा एक रहे, एक से दो, दो से तीन न हो, नित्य सनातन एक रूप में बना रहे।

इस प्रकार वेद को तीन भागों में विभक्त किया है-अदिति, सदावृध तथा सदा+अवृध। अदिति वह ज्ञान है जो सदा रहता है, उसमें दो पक्ष नहीं हो सकते। सदावृध वह ज्ञान है जो सदा बढ़ता रहता है, बदलता रहता है, आज यह और कल वह, बढ़ेगा तो बदलकर ही बढ़ेगा-यह वह ज्ञान है, जिसे हम आज की भाषा में 'विज्ञान' कहते हैं। 'सदा अवृध' यह वह ज्ञान है, जिसे हम पहले 'अदिति' कह आए हैं-सत्य ज्ञान, अखण्डित-ज्ञान, एक-ज्ञान न बदलने वाला ज्ञान या जिसे हम 'ईश्वरीय ज्ञान' कह सकते हैं।

भौतिक ज्ञान सदा बढ़ता रहता है, सदावृध रहता है, इसका गुरु-शिष्य परम्परा द्वारा आदान-प्रदान हो सकता है या मनुष्य द्वारा आविष्कार हो सकता है। आध्यात्मिक

ज्ञान सदा एक रहता है **अदिति या 'अद्वय'** है, दो नहीं एक है, सदा-सनातन है, इसका आविष्कार नहीं हो सकता, यह...............

.........सदा दिया जाता है। संसार में सदा एक रहने वाली अगर कोई वस्तु है तो वह 'सत्य' है, 'सत्य-ज्ञान' है। सत्य सदा एक रहता है, अखण्डित रहता है, वेद के शब्दों में कहें तो सत्य सदा अद्वय है, अदिति है। यह नहीं हो सकता कि किसी बात के लिए हम कहें कि यह भी ठीक है और उसकी विरोधी बात भी ठीक है। उदाहरणार्थ, हिन्दू हो, मुसलमान हो, यहूदी हो, पारसी हो-सभी कहेंगे कि सत्य बोलना चाहिए, कोई नहीं कहेगा कि सच भी बोल सकते हैं और झूठ भी बोल सकते हैं। सब कहें कि प्रेम करना चाहिए, कोई नहीं कहेगा कि प्रेम भी करो और द्वेष भी करो, सब कहेंगे परोपकार करना उचित है, कोई नहीं कहेगा कि परोपकार भी करो, पर अपकार भी करो। कई ऐसे आधारभूत तत्त्व हैं जो अद्वय हैं, अर्थात् उनमें दो पक्ष हो नहीं सकते-ऐसा सब कोई कहते हैं।

अगर अदिति का अभिप्राय अद्वय है, तो वेद ने इसी को उक्त मन्त्र में सदावृध या सदा बढ़ने वाला वर्धमान क्यों कहा? वर्धमान तो वह तत्त्व है जो सदा बढ़ता रहता है। छोटे से बड़ा और बड़े से बहुत बड़ा हो जाता या हो सकता है। आज जैसा है, कल वैसा नहीं है, अर्थात् पहले जैसा नहीं है।

यजुर्वेद के 40 वें अध्याय में 'विद्या' तथा 'अविद्या' का वर्णन आता है। वहाँ कहा गया है-

अन्यदाहुः विद्या अन्यदाहुः अविद्या।
इति शुश्रुम धीराणां येनस्तद् व्याचचक्षिरे।।
विद्यां च अविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते।।

इस मन्त्रों का अभिप्राय है कि अविद्या से मृत्यु को तर जाते हैं और विद्या से अमृत की प्राप्ति होती है। कितनी बेतुकी बात लगती है, यह। यदि अविद्या से मृत्यु को तर जाते हैं तब तो सबका लक्ष्य अविद्या होना चाहिए। परन्तु नहीं, वेद में तथा उपनिषद् में विद्या तथा अविद्या का अर्थ क्रमशः अज्ञान तथा प्रगाढ़ अज्ञान नहीं है वैदिक परिभाषाओं तथा लौकिक परिभाषाओं में जमीन आसमान का भेद है। वेदों तथा उपनिषदों में भौतिकवाद को अविद्या कहा गया है, अध्यात्मवाद को विद्या कहा गया है। यह स्पष्ट है कि भौतिक औषधियों के सेवन से रोग की मुक्ति होती है, दीर्घ जीवन हो सकता है, मृत्यु से लड़ा जा सकता है। इसी कारण तो कहा-'**अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा**'- अविद्या से भौतिकवाद से, मृत्यु को तो तरा जा सकता है। परन्तु-(विद्ययामृतमश्नुते)-अमृत की प्राप्ति 'विद्या' से ही होती है। यहाँ विद्या का अर्थ पढ़ने-पढ़ाने की विद्या से नहीं, आत्मज्ञान की विद्या, अध्यात्मवाद की विद्या है।

हमारा ज्ञान, ज्ञान तभी कहला सकता है, जब वह वर्धमान हो, आगे-आगे बढ़े,

उन्नति करे। आज का वैज्ञानिक-जगत् इसलिए श्रेयकर माना जाता है, क्योंकि आज जो बात ठीक मानी जाती है, कल रिसर्च या परीक्षण खोज करते-करते गलत मालूम पड़ने पर छोड़ दी जाती है। अगर विज्ञान किसी जगह आकर खड़ा हो जाए, तो वह फेंक देने लायक होगा। परन्तु यह बात भौतिक-विज्ञान पर ही लागू होती है, आध्यात्मिक विज्ञान पर नहीं। अध्यात्म सदा 'अद्वय' तथा 'वर्धमान' होता हुआ भी 'अवर्धमान' (सदा+अवृध) होता है। हिंसा से शुरु कर मनुष्य 'अहिंसा' पर जाकर रुकता है, असत्य से शुरु कर सत्य की खोज में भटकता है, चोरी-डाके-स्तेय से चलता-चलता अस्तेय को लक्ष्य बनाता है, अब्रह्मचर्य तथा पर-दारा-गमन से गुजरता सदाचार तथा ब्रह्मचर्य को ही जीवन का लक्ष्य बनाता है, छीना-झपटी से जीवन शुरु कर 'अपरिग्रह' को ही सामाजिक-जीवन बनाता है। भौतिक तत्त्व जब तक वर्धमान तक सीमित रहते हैं, तब तक जीवन अपने लक्ष्य को न पकड़ता, जब जीवन के वर्धमान तत्त्व 'अवर्धमान' को, जीवन के सनातन सत्य को पा लेता है। उसी अद्वय, अदिति, अखण्डित सत्य का वर्णन वेद में किया गया है।

वेदों में मुख्यतौर पर 'वर्धमान'-तत्त्वों का, भौतिकवाद का वर्णन नहीं है, क्योंकि ये तत्त्व भौतिकवाद का अङ्ग होने के कारण परिवर्तनशील हैं। वेदों में 'अवर्धमान'-तत्त्वों का, आध्यात्मिक तथ्यों का वर्णन है, क्योंकि वे नित्य हैं, अपरिवर्तनशील हैं। ज्ञान जब बढ़ेगा तो बढ़ते-बढ़ते उसकी भी सीमा कभी-न-कभी आयेगी। वृक्ष ऊँचा जाता है, परन्तु कहीं तो रुक जाता है। वर्धमान जब 'अवर्धमान' हो जाता है, तब वहीं 'अद्वय' हो जाता है, अदिति हो जाता है। भौतिकवाद जहाँ रुक जाता है, वहाँ आध्यात्मवाद शुरु हो जाता है।

ज्ञान या तो वर्धमान होगा या अवर्धमान होगा। 'वर्धमान' ज्ञान भौतिक है, समय-समय पर मनुष्य की खोज के आधार पर बदलता रहता है, इसलिए बढ़ता भी रहता है, 'अवर्धमान'-ज्ञान आध्यात्मिक है, नित्य है, सनातन है, एक है, अद्वय है, अदिति है, बदलता नहीं है। क्योंकि वेद का ज्ञान मनुष्य की खोज नहीं है, ईश्वरीय देन है, इसलिए उसे वेद ने 'अद्वय' तथा अदिति कहा है। परन्तु ज्ञान का स्रोत मनुष्य तथा ईश्वर दोनों हैं- इसलिए ज्ञान को वेद ने सदावृध भी कहा है। सदावृध के हमने दो अर्थ किये हैं। सदावृध संस्कृत भाषा का विलक्षण शब्द है, जिसमें ज्ञान के मानुषीय तथा ईश्वरीय दोनों पक्ष आ जाते हैं। 'सदा+वध' मानुषीय ज्ञान है, 'सदा+अवृध' मानुषीय ज्ञान है, 'सदा+अवृध' ईश्वरीय या वेद ज्ञान है।

जबकि हम कहते हैं कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, तब हमारा अभिप्राय क्या होता है? क्या यह अभिप्राय होता है कि वेद में फिजिक्स, कैमेस्ट्री आदि सब कुछ है। क्या रेल, हवाई जहाज, तार,

टलिफोन आदि बनाना सब सत्य विद्यायें वेद में हैं अगर वेद में फिजिक्स, कैमेस्ट्री, रेल, तार, हवाई जहाज आदि सब कुछ है तो भगवान् ने मनुष्य को अपने मस्तिष्क से सोचने समझने, खोजने के लिए क्या कुछ भी नहीं छोड़ा? हमें इस बात का भी उत्तर देना होगा कि सब भौतिक आविष्कार उन लोगों ने कैसे किये जो वेद का एक अक्षर भी नहीं जानते थे। वास्तविक स्थिति यह है कि वेदों में भौतिक विद्याओं के बीज तो हैं, परन्तु उसे पुष्पित था फलित या क्रियात्मक रूप देने के लिए उपवेदों की रचना की गई। उपवेदों का निर्माण इसलिए हुआ ताकि वेदों में जिन भौतिक विद्याओं का बीज था, परन्तु उसकी प्रधानता न थी, उपवेदों द्वारा उनका विशदीकरण किया जाये।

वेद में जो भी वैज्ञानिक बात कही गई है, वह उदाहरण या उपमा के रूप कही गई है। मुख्य रूप में नहीं कही गई है। उदाहरणार्थ, यजुर्वेद के 23 वें अध्याय में यज्ञ का वर्णन करते हुए कहा है-**पृच्छामि त्वा परमन्तः पृथिव्याः**-मैं पूछता हूँ पृथ्वी का परम छोर क्या है? इसका उत्तर देते हुए कहा गया है-''**इयं वेदिः परो अन्तः पृथिव्याः**''-यह वेदी जहाँ हम यज्ञ कर रहे हैं, पृथ्वी का परला सिरा है। इसका अर्थ हुआ कि पृथ्वी गोल है, जिसे सिद्ध करने के लिए गैलिलियो को जेल जाना पड़ा था। प्रत्येक गोल वस्तु का आदि तथा अन्त एक ही स्थल होता है, परन्तु यह कथन भूगोल या भूगर्भ के रूप में नहीं कहा गया, यज्ञ के विषय में उदाहरण के रूप में कहा गया है। हमारा कथन है कि वैज्ञानिक या भौतिक तथ्यों को परमात्मा की तरफ से बतला जाने की जरूरत नहीं, उनका आविष्कार करने के लिए भगवान् ने मनुष्य को बुद्धि दी है। आध्यात्मिक तथ्यों को ही वेद द्वारा दिया गया है। अध्यात्म-विद्या ही सत्य विद्या है, वही अद्वय है, वही अदिति है, वही अवर्धमान है, वही विद्या है। भौतिक-विद्या को वेद ने ''सदावृद्ध''-सदा बढ़ने वाली विद्या कहते हुए भी ''अविद्या'' कहा है। भौतिक-विद्या को अविद्या कहते हुए भी जीवन के लिए उपयोगी होने के कारण उसे भी वेद ने सम्मान का स्थान देते हुए कहा है-''**अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा**''-अविद्या से मृत्यु को तो तरा ही जा सकता है, परन्तु अमरत्व तो अध्यात्म से ही प्राप्त होता है।

तो क्या वेद में विज्ञान नहीं है? हमारा उत्तर है-वेद में विज्ञान है और अवश्य है, परन्तु ऐसा विज्ञान जो नित्य है, अखण्ड है, जो सदा-अवृध है, जो बदलता नहीं है। जो विज्ञान बदलता रहता है, वेद की परिभाषा में अविद्या है, सदावृध-सदा-वर्धमान है। सदावृध-सदा वर्धमान-ज्ञान मनुष्य के हाथ में है, सदा अवृध-सदा एक रहने वाला ज्ञान वेद द्वारा भगवान् मानव को देता है।

-प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालङ्कार
डब्ल्यू 77ए, ग्रेटर कैलाश, भाग-1,
नई दिल्ली-110048

हिन्दी मोहन मेरा

हिन्दी है तन मेरा/हिन्दी है मन मेरा।
हिन्दी है धन मेरा/हिन्दी है जीवन मेरा।
हिन्दी हिन्दी हिन्दी हिन्दी हिन्दी नन्दन मेरा।
हिन्दी मेरी भारत माता हिन्दी वन्दन मेरा।

इसमें सूर, कबीरा बसते है मीरा की वाणी।
बोधा, आलम, कुतबन, मंझन है गंगा कल्याणी।
हुलसी से तुलसी, तुलसी से हुलसी है गुड़धाणी।
वरदाई, भूषण दूषण हित कलम बड़ी कटखाणी।
जय हो जय हो जय हो जय हो हिन्दी पूजन मेरा।
हिन्दी है तन मेरा.....................................

पद्मावत लिख गये जायसी उक्ति समासों वाली।
साका-जौहर दर्पण खिलजी आस उजासों वाली।
धूप रूप की अन्ध कूप की खेल-तमाशों वाली।
नागमती पतझरी पद्मिनी रुतमधुमासों वाली।
गोरा-बादल आल्हा-ऊदल है मन भावन मेरा।
हिन्दी है तन मेरा.....................................

हिन्दी अपनी हम हिन्दी के ऐसा भाव जगाएँ।
हिन्दी नहीं सितम्बर की ही सारे साल चलाएँ।
हिन्दी लिखें पढ़ें हिन्दी ही हिन्दी रोयें गायें।
हिन्दी बोल-बोलकर दुनिया को जयहिन्द सिखायें।

www.thearyasamaj.org

हिन्दी आत्ममुक्ति का साधन हिन्दी बन्धन मेरा।
हिन्दी है तन मेरा.....................................

हिन्दी के ही शब्दकोश से निकला अमर तिरंगा।
हिन्दी है तो कल-कल करती बहती यमुना-गंगा।
गद्य-पद्य की धाराओं पर चमके कंचन-जंगा।
सबकी जिह्वाओं पर नाचे उच्छल जलधि तरंगा।

जागो-जागो-जागो-जागो हिन्दी मोहन मेरा।
हिन्दी है तन मेरा.....................................

हिन्दी वतन हवन है हिन्दी गन्ध-सुगन्ध हमारी।
चिन्तन मनन कथन लेखन प्रवचन सुरभित फुलवारी।
भव्य भवन सौभाग्य सदन रक्षाबन्धन हितकारी।
जटाजूट शिव के डमरू से निकली दिव्य सवारी।

हिन्दी अपना बचपन पचपन हिन्दी यौवन मेरा।
हिन्दी है तन मेरा.....................................

हिन्दी नहीं मात्र भाषा भारत-चेतना बतायें।
हिन्दी है गोरस की मटकी योग-क्षेम छलकायें।
हिन्दी ऋषियों की परम्परा चन्दन सा महकायें।
हिन्दी नहीं किसी से भी कम दुनियां को दिखलायें।

क्या कर लेगा 'कविर्मनीषी' छलिया नन्दन मेरा।
हिन्दी है तन मेरा, हिन्दी है मन मेरा हिन्दी है धन मेरा।

डॉ० सारस्वत मोहन 'मनीषी'

मोबाइल: 9810835335

8527835835

स्वामी ओमानन्द जी की डायरी से

स्वामी ओमानन्द जी की डायरियां 1945 से सन् 2002 तक जितनी उपलब्ध हुईं उतनी मैंने संग्रह करके अगस्त 2012 में प्रकाशित करवादी थी। उसमें 1946, 1950, 1980, 1981, 1989 और 2003 की डायरियां नहीं मिली थीं।

*अब विरजानन्द दैवकरणि के द्वारा सन् 1989 की डायरी मिली है उससे घटना संकलन करके यहीं दी हैं।-**वेदव्रत शास्त्री***

65 (क) मधुर डायरी 1989 ई०
(विक्रम संवत् 2045-46)

5-1-89 भाभर
96 रुपये का डीजल दिवोदर में।
26 रुपये का साबुन, 28 रुपये का दूध जयपुर में।

6-1-89

बवासीर की औषध- नरकचूर, कुटकी, रसौंत, बकायन के फल, सब समभाग लेकर, कूटकर कपड़छान कर लो।
मात्रा दो ग्राम।
पहले दो दिन खाली पेट ताजे जल के साथ, तीसरे चौथे दिन गाय के मट्ठे के साथ, पांचवें छठे दिन गाय के दूध के साथ, सातवें आठवें दिन गाय के दूध में घी डालकर आठ दिन तक लें।

आंख की दवाई (सफेद मोतिया व जाला इससे कटता है)
नारियल का पानी 2 किलो, दारु हल्दी ढाई तोले, त्रिफला साढे सात तोले, मुलहटी ढाई तोले, सफेद पुनर्नवा की जड़ पांच तोले, निर्मली के बीज ढाई तोले, भीमेसनी कपूर 6 माशे, सैंधा लवण 6 माशे, शहद एक पाव, दारुहल्दी आदि पांच औषधियां जौकुट करके नारियल के पानी में उबालें, एक सेर रहने पर मलकर छान लें। छाने हुए को पुनः उबालें, इस को पुनः पकाएं, एक पाव रहने पर नमक और कपूर बारीक पीसकर मिलालें। अन्त में एक पाव मधु मिलाकर शीशी में रखें और नीम की सींख की सलाई से दोनों समय लगाएं।

7-1-89 भाभर में 1500 रुपये की पुस्तकें व दवाई बिकी। 2000 रुपये भूरा भाई ने दक्षिणा के दिये। 14 रुपये के प्याज, 158 रुपये का डीजल।

8-1-89 राजकोट
5 रुपये दानपात्र में डाले टंकारा महर्षि जन्मस्थली। 4 रुपये का गैरुं राजकोट। 500 रुपये की दवाई व पुस्तकें बिकी-राजकोट आर्यसमाज हाथीखाना।

9-1-89 40 रुपये की पुस्तकें खरीदीं राजकोट आर्यसमाज हाथीखाना से, 140 रुपये

www.thearyasamaj.org

का अमृतबान खरीदा, 12 किलो शहद खरीदा 360 रुपये का, अदरक खरीदी 60 रुपये, कपूर 12.50 पैसे, सैंधा नमक 2 रुपये शीशी 4, नेलकटर 6 रुपये।

जाले और सफेद मोतिया की दवाई

सफेद प्याज का रस 50 ग्राम, अदरक का रस 50 ग्राम, मधु 300 ग्रामा, सैंधा लवण 10 ग्राम, कपूर 10 ग्राम, निम्बू का रस 10 बूंदें। सब को मिलाकर निथार लें। प्रात: सायं आंखों में टपकाएं।

1100 रुपये की दवाई व पुस्तकें बिकी।

10-1-89 20 रुपये के प्याज राजकोट में खरीदे। 18 रुपये की शीशी आंखों की दवाई के लिए। 200 रुपये की दवाई व पुस्तकें बिकी।

11-1-89 राजकोट। 100 रुपये की पुस्तक व दवाई बिक्री। 13 रुपये का नमक व कपूर खरीदा राजकोट में। 23 रुपये का शहद खरीदा।

12-1-89 राजकोट

201 रुपये दक्षिणा एक रानी ने दिये घर पर। 550 रुपये की दवाई व पुस्तक बिकी आर्यसमाज राजकोट

13-1-89 89 रुपये का मोबिल गाड़ी का तेल बदलने के लिए।

14-1-89 राजकोट

300 रुपये की दवाई व पुस्तक बिक्री 234 रुपये के गाड़ी के फिल्टर व बल्ब खरीदे।

15-1-89 राजकोट

1300 रुपये की पुस्तक व दवाई बिक्री, 2032 रुपये का घी खरीदा राजकोट से, 120 रुपये की घड़ी खरीदी।

16-1-89 116 रुपये का डीजल, 36 रुपये शीशी आंखों की दवाई के लिए। 1600 रुपये दक्षिणा-500 रुपये ब्रह्मचारियों के लिए।

17-1-89 500 रुपये पूज़ीराम प्रधान आर्यसमाज पाटन, 51 रुपये यज्ञेश आर्य, 10 रुपये राजेन्द्र मन्त्री, 5 रुपये, सेवन्तीलाल, 5 रुपये जीवनलाल। 1100 रुपये की पुस्तक व दवाई बिकी। 113 रुपये का डीजल, 15 रुपये गाड़ी यात्री टेक्स आबू में।

18-1-89 4 रुपये का कपूर, 10 रुपये आबू आर्यसमाज के दानपत्र में डाले। स्वामी नृसिंहानन्द जी महाराज सनातन धर्म सेवाश्रम अलीराजपुर 110 रुपये की दवाई बिकी आबू पर्वत, 130 रुपये का डीजल पाली मध्यप्रदेश, 2 रुपये पुल टोल टेक्स

19-1-89 1200 रुपये की दवाई बिकी जोधपुर में, 25 शीशी अनुपमरस, 10 डिब्बे सप्तामृत लौह जोधपुर भेजनी हैं।

www.thearyasamaj.org

20-1-89 2000 रुपये पहले वाले आये जोधपुर वालों से। 1000 रुपये की पुस्तक व दवाई बिकी। 500 रुपये का मोती खरीदा, 113 रुपये का डीजल, 1800 रुपये की पुस्तकें वैदिक यन्त्रालय अजमेर से खरीदी, 5314 रुपये की दवाई खरीदी कालेड़ा से, 1 कट्टा च्यवनप्राश यतेन्द्र चौधरी ऋषि उद्यान अजमेर।

21-1-89 अनुपम प्रकाशन जयपुर वालों से पहला हिसाब बराबर करके पुस्तकें ली। 1000 रुपये और दिये। 73 रुपये का डीजल रेवाड़ी में। गुरुकुल झज्जर में आये।

500 रुपये पुस्तकों के लिए दिए, डाक से आयेंगी जयपुर से।

22-1-89 सुरहेती शराबबन्दी सम्मेलन 10 बजे।

500 रुपये लेकर गुरुकुल झज्जर से चले।

2 विशेष, 2 साधारण च्यवनप्राश डिब्बे सत्यदेव भारद्वाज को दिए।

23-1-89 300 रुपये का च्यवनप्रकाश बिका गाजियाबाद में। 100 रुपये माता सुशीला ने स्वामी जी को दक्षिणा दी। 100 रुपये रसीद के बाद में हिसाब होगा, 70 रुपये का डीजल खरीदा। 750 रुपये की शीशी खरीदी।

24-1-89 2530 रुपये नरेला से प्राप्त किए पहले की दवाइयों के। 200 रुपये की सामग्री बिकी, 400 रुपये छात्रवृत्ति के लिए दिए आचार्या सुमित्रा गुरुकुल जसात को।

28-1-89 500 रुपये लेकर चले।

60 रुपये दवाई के मिले, कलानोर पहले के, 30 रुपये का डीजल, 7 रुपये का संग्रहालय का सामान।

क्रमशः.............

गाँव भालौट में वैदिक विधि से होली मंगलाई गई।

गावँ भालौट जि. रोहतक में "ग्राम कल्याण समिति" भालौट तथा ग्राम पंचायत भालौट के संयुक्त प्रयास से विशुद्ध वैदिक विधि से मंत्रोच्चारण द्वारा होली मंगलाई गई। एक मास तक अनेक विशिष्ट सज्जनों की बैठकें करके निर्णय लिया गया कि होली पर्व को वैदिक विधि से मनाया जाए। निर्णय के बाद श्री लाभसिंह, डॉ० रामफल, पं० सुदर्शनदेव, अजीत शास्त्री, महावीर शास्त्री, राजेन्द्र शास्त्री, जगबीर शास्त्री आदि ने अनेक ग्रामीणों के सहयोग से घर घर जाकर जगरूकता अभियान चलाया। प्रत्येक गली चौपाल व चौराहों पर नुक्कड़ सभाएँ कर लोगों को ही समझाया गया कि होली अन्न सुरक्षा, भाईचारे, एकता व नई वसन्त ऋतु में उत्पन्न उमंग से परस्पर खेलों

कुश्ती, कबड्डी, दौड़, कूद का पर्व है वहीं उत्तम भावना के गीत संगीत द्वारा मनोरंजन कर एकता व भाईचारे को बढाने का संदेश देता है। कोई भाई बहन परस्पर रंग, पानी, पिचकारी या गुब्बारों, का प्रयोग न करे। परतंत्रता में शिक्षा प्रणाली के बिगड़ने से तथा व्यापारियों द्वारा नई नई वस्तुएं निर्माण कर बेचने से हमारे पर्व बिगड़ गए हैं आओ इन्हें सुधार कर एक नए सुखकारी समाज का निर्माण करें। सभी वर्ग के भाई बहनों ने इसे सराहा। गाँव से एक मन घी, एक मन सरसों की खल एकत्र की गई। जिला खाद्य आपूर्ति अधिकारी श्री राजेश शास्त्री ने एक मन सुन्दर सामग्री दान की तथा कवि वैद्य दिलबागसिंह ने 10 किलो मिश्री का प्रसाद दान किया। माता धनपती वाल्मीकी श्री रामसिंह स्वतंत्रता सेनानी परिवार श्री बलवीर सिंह मण्डली की भाईचारे व एकता की सुन्दर रागनी प्रस्तुत की गई। माताओं व बच्चों नें होली के गीत गाए। लगभग 6 बजे सभी वर्गों से पांच माताओं व पांच विशिष्ट जनों के साथ सरपंच श्री बलबीरसिंह व पंचों ने सामूहिक रूप से होली यज्ञाग्नि प्रदीप्त की। श्री अजीत शास्त्री श्री राजेश शास्त्री ने नवशस्येष्टि के वेदमंत्रों द्वारा ग्रामिणों से आहुतियाँ डलवाकर होली मंगलाई गई। अगले वर्ष को अच्छे ढंग से होली मंगलाने का संकल्प सभी ने व्यक्त किया।

–कर्नल, जयप्रकाश नारायण फोगाट
सचिव ग्राम कल्याण समिति
भालौट (रोहतक)

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल, मुजफ्फरनगर उत्तर प्रदेश में प्रवेश प्रारम्भ

इस गुरुकुल महाविद्यालय में संस्कृत भाषा के साथ-साथ आधुनिक विषयों जैसे अंग्रेजी, गणित, इतिहास, भूगोल एवं अर्थशास्त्र आदि विषयों का अध्यापन सुयोग्य अध्यापकों के द्वारा कराया जाता है। कम्प्यूटर शिक्षा का उत्तम ज्ञान कराया जाता है। छात्रों को उत्तम संस्कार प्रदान करने हेतु प्रतिदिन प्रातः एवं सायं सन्ध्या हवन एवं यौगिक क्रियायें करायी जाती हैं। सुसज्जित छात्रावास उपलब्ध है। छात्रों को सादा एवं पौष्टिक भोजन खिलाया जाता है। नये सत्र के प्रवेश 01 अप्रैल 2017 से प्रारम्भ हो रहे हैं। यहाँ पर मध्यमा स्तर (इन्टरमीडिएट) की परीक्षाएं उ०प्र० माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद् लखनऊ तथा महाविद्यालय स्तर का पाठ्यक्रम 'सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी द्वारा संचालित है। संस्था में प्रवेश के लिए छात्र का 5 वीं कक्षा उत्तीर्ण होना अनिवार्य है।

कृपया अपने होनहार बच्चों को संस्कार युक्त शिक्षा दिलाने हेतु दूरभाष पर भी वार्ता करके प्रवेश दिलायें। प्रवेश नियम डाक से अथवा व्यक्तिगत रूप से प्राप्त कर सकते हैं। विद्यालय में 2 रसोइया, एक वार्डन (संरक्षक), एक क्लर्क तथा संस्कृत संस्थान के मानदेय पर तीन संस्कृत अध्यापक व दो आधुनिक विषय के अध्यापकों की आवश्यकता है शीघ्र सम्पर्क करें। अधिक जानकारी फोन से प्राप्त की जा सकती है।

स्वामी आनन्दवेश	प्रेमशंकर मिश्र
(बलदेव नैष्ठिक)	प्रधानाचार्य
प्रबन्धक	9411481624
9997437990	9997047680

www.thearyasamaj.org

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद (म०प्र०) में उपदेशक-महाविद्यालय/विभाग का शुभारम्भ

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय नर्मदापुरम् होशंगाबाद में पूज्य आचार्य सत्यसिन्धु आर्य (प्रधानाचार्य गुरुकुल) के जन्मोत्सवस्वर्णजयन्ती समारोह के अवसर पर दि. 10 जून 2017 से उपदेशक-महाविद्यालय/विभाग का शुभारम्भ किया जा रहा है। प्रवेशार्थी युवक निम्न चलभाष पर संपर्क कर सकते हैं। दूरभाष क्र. 9424471288, 9907056726।

उद्देश्य व नियमावली- इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य आर्यजगत् के लिए उपदेशक व प्रचारक तैयार करना है। इस पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए न्यूनतम दशमी कक्षा उत्तीर्ण, कम से कम 18 वर्ष के स्वस्थ चरित्रवान् युवा अपेक्षित हैं। यह पाठ्यकम त्रिवर्षीय है। इसमें निम्न उपाधियां प्रदान की जायेंगी 1) सिद्धान्तप्रवेशक:, 2) सिद्धान्ताधिकारी, 3) सिद्धान्तभास्कर, 4) सिद्धान्तप्रभाकर, 5) सिद्धान्तवाचस्पति, 6) सिद्धान्तमार्तण्ड। प्रत्येक छ:-छ: मास में लिखित व मौखिक परीक्षा लेकर क्रमश: उपरोक्त उपाधियों में से एक प्रमाणपत्र सहित प्रदान की जावेगी।

उपदेशक महाविद्यालय/विभाग के प्रवेश नियम- 1)प्रवेशार्थी युवक कम से कम दसवीं कक्षा उत्तीर्ण 18 वर्ष का वयस्क पूर्ण अनुशासन में चलने वाला होवे। 2. युवक का लिखित व मौखिक परीक्षण किया जाएगा। परीक्षण में संतुष्ट होने पर गुरुकुल के आचार्य के द्वारा प्रवेश की अनुमति दी जा सकेगी। 3. वर्तमान वर्ष में उत्तीर्ण कक्षा की अंक सूची की मूल प्रति साथ में लाएँ। 4. अध्ययनकाल में भोजन आदि की व्यवस्था सब छात्रों के लिए समान रूप से गुरुकुल द्वारा नि:शुल्क की जायेगी। 5. अध्ययनकाल में घर जाने का कोई अवकाश नहीं होगा। माता-पिता आदि बिना अनुमति के नहीं मिल सकेंगे। 6. अध्ययनकाल में निजी रूप से मोबाईल आदि रखना निषिद्ध रहेगा। 7. प्रवेशार्थी को 26 अप्रैल तक गुरुकुल में पहुंचना होगा। 8. अध्ययनकाल में गुरुकुल परिसर से बाहर जाने की अनुमति लेनी अनिवार्य होगी। 9. प्रशिक्षुक के पास कोई राशि नहीं रहेगी। आचार्य ही आवश्यकतानुसार छात्र पर खर्च करेंगे। 10. प्रशिक्षुक के सर्वांगीण विकास हेतु योग आसन प्राणायाम व्यायाम क्रीडा संगीत व उचित अध्ययन की व्यवस्था रखी गई है। 11. इस वर्ष केवल 10 छात्रों को ही प्रवेश दिया जायेगा। 12. प्रवेशार्थी युवक अविवाहित हो। 13. श्वेत कटिवस्त्र, उत्तरीय धोती कुर्ता एवं लँगोट कच्छा आदि सादे वस्त्र ही धारण करे। फैशन से सर्वथा दूर रहे। 14. दाढ़ी मूंछ व शिर के बिना कटाए जटिल रहे या शिर पर शिखा रखकर सब बाल प्रत्येक मास कटाकर मुंडित रहे।

निवेदक

(आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक)

अमृतसर का जलियांवाला बाग काण्ड

वैद्य महादेव लातूर (महाराष्ट्र)

13 अप्रैल सन् 1919 वैसाखी के पवित्र दिन 20 हजार भारत के वीरपुत्रों ने अमृतसर के जालियां वाले बाग में स्वाधीनता का यज्ञ रचा था। वहां आबाल वृद्ध सभी उपस्थित थे, सबने एक स्वर से स्वाधीनता की मांग की। इस पर अंग्रेजों को यह सहन न हुआ। वे अपने बल का प्रदर्शन करने बाग की ओर गये। वहां जाकर लगातार 15 मिनट तक गोली वर्षा की। इस बाग के चारों और ऊंची ऊंची दीवारें विद्यमान थीं। प्रवेश के लिए एक छोटा सा द्वार था, इसी द्वार पर उस नीच डायर ने मशीनगन लगवा दी। जब तक गोली थीं तब तक चलवाता रहा। वहां रक्त की धारा बह चली। सरकारी समाचार के अनुसार 400 व्यक्ति मृत तथा 2000 के लगभग घायल थे।

कर्णपरम्परा से सुना जाता है कि नीच डायर ने यह कुकृत्य हिन्दुओं के द्वारा करवाया था। हिन्दू फौज आगे और इसके पीछे गौरखा फौज थी। इस गोलीकाण्ड में नीच कर्म यह किया गया कि मृत व घायलों को बाग में ही रातभर तड़फने दिया गया। इनकी मरहमपट्टी तो दूर की बात है किसी को पीने के लिए जल तक न दिया। वहां पास में कुंआ था उसमें अनेक व्यक्ति अपनी जान बचाने के लिए कूद पड़े। गोलीकाण्ड समाप्त हुआ तो उस कुंए में से लगभग सवासौ शव निकाले गये। इस प्रकार इस कुंए की मृतकूप संज्ञा पड़ गई।

हत्यारे डायर ने हण्टर कमीशन के सामने स्वयं बड़े गर्व से कहा था कि मैंने बड़ी भीड़ पर 15 मिनट तक बड़ी धूआंधार गोलियां चलाईं। मैंने भीड़ हटाने का प्रयास नहीं किया, मैं बिना गोलियां चलाये भीड़ को हटा सकता था पर इसमें लोग मेरी हंसी करते। कुल गोलियां 1650 चलाई थीं। गोली बरसाना तब तक किया जब तक कि वह समाप्त न हो गई और साथ ही यह भी स्वीकार किया कि मृतकों को उठाने व उनकी मदद करने का कोई प्रबन्ध नहीं किया। इसका कारण बताते हुए कहा-उस समय उन घायलों की मदद करना मेरा कर्त्तव्य नहीं था। डायर की इस क्रूरता को पंजाब के शासक पर माईकेल ओडायर ने न केवल उचित ही ठहराया अपितु तार द्वारा प्रशंसा की सूचना दी कि आपका कार्य ठीक था। लैफ्टिनैन्ट गवर्नर उसकी सहायता करते हैं।

सन् 1857 के बाद गोरी सरकार का सबसे बड़ा अत्याचार यह गोलीकांड था। इस दु:खद घटना के बाद भारतीयों को बर्बरतापूर्ण तथा अमानुषिक सजायें दी गईं। अमृतसर का पानी बन्द कर दिया, बिजली के तार काटे गये। खुली सड़कों पर कोड़ों से भारतीयों को मारा गया। यहां तक कि रेल का तीसरी श्रेणी का टिकट बन्द कर भारतीय यात्रियों का आना जाना बन्द कर दिया।

इसी बाग में सबके साथ उधमसिंह का पिता भी शहीद हो गया था। इसका बदला लेने के लिए वह इङ्गलैंड गया। वहां एक सभा में एक दिन वह नीच डायर भाषण दे रहा था। भाषण में वह कह रहा था कि मैंने भारतवर्ष में इस प्रकार के अत्याचार ढाये हैं। इतने में वीर उधमसिंह ने अपनी पिस्तौल का निशाना बनाकर उसका काम तमाम कर दिया। इस प्रकार वीर उधमसिंह ने अपनी पिता व भारत

पर किये गये अत्याचारों का बदला ले लिया। अन्त में अदालत ने वीर उधमसिंह को इस अपराध में फांसी पर लटकाकर अमर शहीदों की पंक्ति में भरती कर दिया।

जलियां वाले बाग में प्रवाहित शहीदों का रक्त वृथा नहीं गया। शहीदों के रक्त द्वारा सींचा हुआ यह स्वाधीनता का कल्पवृक्ष बढ़ता हुआ 15 अगस्त सन् 1947 को पल्लवित हुआ।

-देशभक्तों के बलिदान से साभार

होली के उपलक्ष्य में सारंगपुर में यज्ञ सम्पन्न

ग्राम सारंगपुर (नजफगढ) में प्रतिवर्ष की भांति इस बार भी गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियों द्वारा स्वामी शुद्धबोध जी के ब्रह्मत्व में-वेद से यज्ञ कराया गया। प्रतिदिन यज्ञ के समय सारे ग्राम से पुरुष-महिलायें और बच्चे भी बड़ी श्रद्धा से उपस्थित होते रहे। यज्ञ के प्रतिदिन पश्चात् स्वामी शुद्धबोध जी का उपदेश होता रहा। स्वामी शुद्धबोध जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि धूलैंडी के त्योहार पर रंगों से खेलना, पुराने ईर्ष्या द्वेष का बदला लेना, महिलाओं से अभद्रता करना आदि नहीं करना चाहिये। यह पर्व आपस में भाईचारा और प्यार-प्रेम बढावे का है। पूर्णाहुति के दिन गुरुकुल झज्जर के आचार्य श्री विजयपाल जी योगार्थी ने सभी श्रोताओं को यज्ञ का महत्त्व बताया तथा प्रेरणा दी कि प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन एक समय तो यज्ञ अवश्य ही करना चाहिये। हम अपने शरीर के दोनों समय अथवा प्रत्येक अंग से दूषित पदार्थों को बाहर निकालते हैं, इससे वातावरण में गन्दगी फैलती रहती है, इसके अतिरिक्त धूमपान, शराब, मांस तथा अण्डे आदि के सेवन से भी वातावरण दूषित होता रहता है। अतः इस दूषित वातावरण को शुद्ध करने के लिए हमें प्रतिदिन यज्ञ करना चाहिये, जिससे जलवायु पवित्र होकर सभी व्यक्ति नीरोग रहें।

यज्ञ के उपरान्त ग्रामवसियों ने अति श्रद्धापूर्वक आचार्य जी को 3100 रुपये, स्वामी शुद्धबोध जी को 2100 तथा प्रत्येक ब्रह्मचारी को 1100-1100 रुपये दक्षिणा दी तथा भोजनोपरान्त सबको हार्दिक विदाई दी। यह यज्ञ 10 मार्च 2017 से 12 मार्च 2017 तक सम्पन्न हुआ।

हर्ष सूचना

पूर्ण स्वस्थ रहने के लिए एक स्वर्णिम अवसर

तुरन्त सम्मर्क करके पूर्ण लाभ प्राप्त करें। महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर के रेवाड़ी राजमार्ग पर स्थित परिसर में स्वामी ओमानन्द सरस्वती योग एवं प्राकृतिक चिकित्सालय प्रारम्भ हो चुका है। रोगी व्यक्ति आकर लाभ उठा रहे हैं। जिन व्यक्तियों के शरीर के किसी भी जोड़ में जैसे-गर्दन, कमर, रीढ की हड्डी, घुटने आदि में दर्द हो, पेट खराब हो, अपचन, कब्ज, गैस, भूख नहीं लगती हो, नींद नहीं आती हो, सिर में दर्द बना रहता हो, चक्कर आता हो, जिगर-तिल्ली खराब हो, पेशाब में रुकावट या बार-बार पेशाब आता हो, गुर्दे सम्बन्धी पीड़ा हो, फोड़े-फुंसियाँ हों या रक्तविकार हो इत्यादि अनेक प्रकार के रोगों का उपचार 36 प्रकार की प्राकृतिकविधि जैसे एनिमा, मिट्टी के लेप, धूप सेवन, तैलामालिश, शुद्ध खानपान आदि के द्वारा सफलतापूर्वक की सुविधा उपलब्ध है। इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क करके स्वास्थ्य लाभ उठायें।

-:निवेदक:-

आचार्य विजयपाल	वैद्य बलराम	डॉ० आनन्द स्वामी
9416055044	981358815	8683865100
	8295301232	

ग्राम गोच्छी (झज्जर) में शान्ति यज्ञ सम्पन्न

दिनांक 10 मार्च 2017 ई.। गुरुकुल झज्जर के विशेष सहयोगी स्वर्गीय श्री चन्द्रभान जी की पत्नी (श्री अजीत सिंह जी की माता) श्रीमती मरवन देवी का निधन ग्राम गोच्छी में 5 मार्च 2017 को हो गया। वे 97 वर्ष की थी। उनका शान्ति यज्ञ 10 मार्च 2017 को आचार्य विजयपाल जी योगार्थी ने करवाया। शान्ति यज्ञ के समय लगभग 50 श्रोता उपस्थित थे। आचार्यजी ने शरीर की अनित्यता और आत्मा के अमरत्व का उदाहरण देते हुए गीता के माध्यम से सारगर्भित उपदेश देकर समझाया कि ऐसे समय में शोक नहीं करना चाहिये अपितु यह मानना चाहिये कि जैसे पुराने वस्त्र को प्रसन्नतापूर्वक त्यागकर नवीन वस्त्र धारण किया जाता है, इसी प्रकार जीर्णशीर्ण शरीर को त्यागकर जीवात्मा नूतन शरीर धारण कर लेता है। यह स्वाभाविक व्यवस्था परमात्मा की ओर से होती रहती है। अत: हमें इस प्रकार के अवसर पर शोक न करके यह शिक्षा लेनी चाहिये कि इस दुर्लभ मानव जीवन को पाकर मोक्ष में जाने का उपाय करना चाहिये। श्रद्धेय माता जी के बिछुड़ने से परिवार को जो कष्ट हुआ है, ईश्वर की कृपा से उसे धैर्यपूर्वक सहन करना चाहिये। जैसी धर्मपरायण माता जी थी, आपको उनके अनुसार आचरण करके अपने जीवन को भी धर्मपूर्वक व्यतीत करना चाहिये।

इस अवसर पर परिवार की ओर से गुरुकुल झज्जर के लिए 2100 रुपये का दान भी दिया गया।

आर्यसमाज की स्थापना विषयक महर्षि दयानन्दजी सरस्वती का पत्र

श्रीरस्तु

स्वस्ति श्रीमच्छ्रेष्ठोपमायुक्तेभ्यः श्रीयुतगोपालराव हरिदेश मुखादिभ्यो दयानन्द सरस्वती स्वामिन आशिषो भूयासुस्तमाम्। शमिहास्ति, तत्राप्यस्तुतमाम्। आगे मुम्बई में चैत्रशुद्ध 5 शनिवार के दिन सन्ध्या के साढे पांच बजते आर्यसमाज का आनन्दपूर्वक आरम्भ हुआ। ईश्वरानुग्रह से बहुत अच्छा हुआ। आप लोग भी वहां आरम्भ कर दीजिये। विलम्ब मत कीजिये। नासिक में भी होने वाला है। अब आर्यसमाजार्थ [नियम] और संस्कार विधान का पुस्तक वेदमन्त्रों से बनेगा शीघ्र। इन्द्रप्रकाश वाले विष्णु शास्त्री सुधारेवाला तो नहीं किन्तु कुधारेवाला मालूम पड़ता है। उसका प्रत्युत्तर करके उसके पास भेजा था, परन्तु उसने नहीं छापा। इससे पक्षपात भी दीखता है। अब वह अन्यत्र छपवाया जायेगा। सन्ध्योपासनादि पञ्चमहायज्ञविधान का भाष्य सहित पुस्तक यहां छपवाया गया है। सो 10 पुस्तक आपके पास भेजा जाता है। यथायोग्य उत्तम पुरुषों को बांट देना। उन नियमों में दो नियम बढे हैं। सो एक विवाहादि उत्साह किंवा मृत्यु अथवा प्रसन्नता समय जो कुछ दान पुण्य करना उसमें से श्रद्धानुकूल आर्यसमाज के लिए अवश्य देना चाहिये। और दूसरा नियम यह है जब तक नौकरी करने वाला तथा नौकर रखने वाला आर्यसमाजस्थ मिले तब तक अन्य को न रखना और न रखाना।

www.thearyasamaj.org

और यथायोग्य व्यवहार दोनों रखें। प्रीतिपूर्वक काम करें और करावें। डाक्टर माणिक जी ने आर्यसमाज होने के लिए स्थान दिया है, परन्तु संकुचित है। सो जब बहुत बढेंगे मिम्बर तब दूसरा नया बनेगा, किं वा कोई ले लिया जायेगा। अत्यन्त आनन्द की बात है कि आप लोगों के ध्यान में स्वदेशहित की बात निश्चित हुई है। परमात्मा के अनुग्रह से उन्नति नित्य इसकी होय।

संवत् 1931 मिती चैत्र शुद्ध 6 रविवार।

सम्पादकीय टिप्पणी-

आर्यसमाज में सर्वत्र यह अशुद्ध परम्परा प्रवृत्त हो गई है कि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन आर्यसमाज का स्थापना दिवस मनाया जाता है। इस नववर्ष के साथ जोड़ने का अनावश्यक आग्रह किया जाता है। मुम्बई आर्यसमाज में जो सूचना पट्ट लगा है वह स्थापना के सात वर्ष पश्चात् अनुमान से तिथि बनाकर लिखा है। महर्षि के पत्र का प्रमाण होते हुए हमें चैत्रशुक्ला पञ्चमी को ही स्थापना दिवस मनाना चाहिये। पं० लेखरामजी तथा बाबू देवन्द्रनाथ ने भी महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवनचरित में पञ्चमी को ही स्वीकृत किया गया है। अतः सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रचारित प्रतिपदा तिथि अशुद्ध और अप्रामाणिक है। मुम्बई आर्यसमाज की पुरानी कार्यवाही में भी पञ्चमी ही लिखी हुई है अतः सभी आर्यसमाजों से निवेदन है कि वे आर्यसमाज स्थापना दिवस चैत्रशुक्ला पञ्चमी को ही मनाया करें। प्रथम स्थापना के दिन 10 अप्रैल 1875 ई. था।

-विरजानन्द दैवकरणि

ओ३म्

गुरुकुल यमुनानगर में नया प्रवेश प्रारम्भ

परम पूज्य स्वामी आत्मानन्द जी महाराज की तपःस्थली श्रीमद् दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय, शादीपुर, जि. यमुनानगर (हरयाणा) में अप्रैल से जून 2017 तक प्रवेश होंगे। पञ्चम श्रेणी उत्तीर्ण छात्रों को ही आश्रम में प्रवेश मिलता है। बिना किसी भेद-भाव के सभी वर्गों के छात्र अध्ययन कर सकते हैं किन्तु प्रवेश से पूर्व छात्रों की परीक्षा लिखित एवं मौखिक दो चरणों में सम्पन्न होती है। प्रवेश परीक्षा शुल्क रुपये 350 है।

परीक्षा विषय- प्रवेशार्थी ने विगत वर्षों में जो कुछ पढ़ा है तथा बुद्धि परीक्षण के लिए सामान्य ज्ञान की बातें। प्रवेशार्थी छात्र की आयु-10, 11 वर्ष की होनी चाहिए और छात्र कुशाग्र बुद्धि व शारीरिक रूप से स्वस्थ होने चाहिएं। विशेष जानकारी के लिए संम्पर्क करें।

निवेदक

आचार्य जी

उपदेशक महाविद्यालय, शादीपुर, जि. यमुनानगर (हरयाणा) 135201

मोबाईलः- 7015716452, 7071839061, 9991364851

www.thearyasamaj.org

गुरुकुल के 101 वें वार्षिकोत्सव की चित्रमय झलकियाँ

श्री डॉ० योगनन्द शास्त्री, कुलपति भाषण देते हुए।

श्री स्वामी देवव्रत जी उपदेश देते हुए।

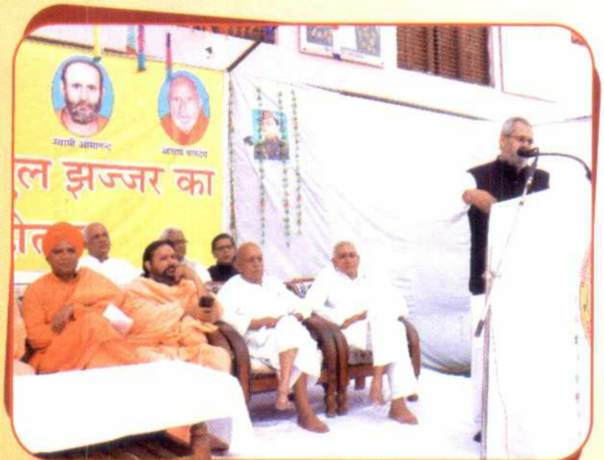

कवि श्री सारस्वत मोहन कविता पाठ करते हुए।

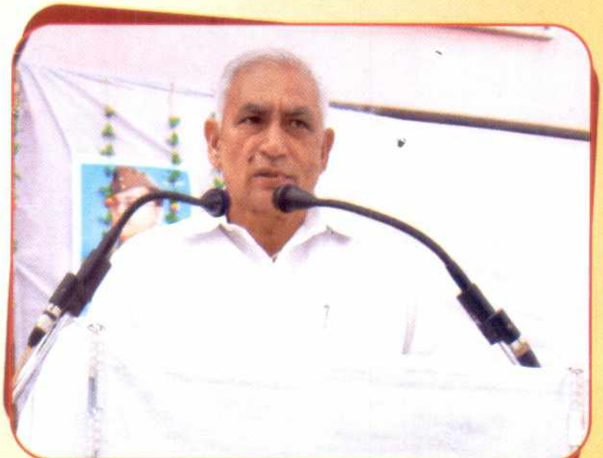

श्री राजवीरसिंह छिक्कारा मंच संचालन करते हुए।

श्री पं० नरेश दत्त जी स्वागत का आभार प्रकट करते हुए।

श्री धर्मपाल आर्य प्रधान व्याख्यान देते हुए।

www.thearyasamaj.org

मंच पर आसीन संन्यासीगण

श्री महाशय नन्दराम जी भजन गाते हुए।

डॉ० आनन्द कुमार जी व्याख्यान देते हुए।

श्री तेजवीर जी भजन गाते हुए।

पंजाब हरियाणा हाईकोर्ट चण्डीगढ़ के न्यायाधीश सरदार जसपालसिंह जी गुरुकुल झज्जर के संग्रहालय का अवलोकन करते हुए।

उत्सव समाप्ति पर धन्यवाद करते हुए आचार्य विजयपाल जी।

आर.एन.आई. द्वारा रजि. नं. 11757
पंजीकरण संख्या-P/RTK/85-3/2017-19

सुधारक लौटाने का पता :-
गुरुकुल झज्जर, जिला झज्जर (हरयाणा)-124103
E-mail : gurukuljhajjar@gmail.com

ग्राहक संख्या

श्री

स्था

डा०

जिला

प्रकाशक आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ,